Subject:- History (Sub)
Degree Part I -(Sub)
Lecture No - 46

Dr. H. N. Mahto
Deptt of History
9835007357
Date:- 16.5.2020

Ques:- एक शासक के रूप में इल्तुतमिश का मूल्यांकन कीजिए।

Ans:- वस्तुतः दिल्ली का पहला सुल्तान इल्तुतमिश था। उसने सुल्तान के पद की स्वीकृति किसी गोर के शासक से नहीं बल्कि खलीफा से प्राप्त की। इस प्रकार वह कानूनी तरीके से दिल्ली का प्रथम स्वतंत्र सुल्तान हुआ। इल्तुतमिश को कुतुबुद्दीन ऐबक ने खरीदा था। इस कारण वह एक गुलाम का गुलाम था। परन्तु अपनी योग्यता के कारण उसने अपने स्वामी से पहले दासता से मुक्ति प्राप्त कर ली थी। मुहम्मद गोरी ने अपने समय में ही उसे दासता से मुक्त कर दिया था।

इल्तुतमिश कुतुबुद्दीन ऐबक का दामाद था न कि उसका वंशज। इल्तुतमिश इल्बरी वंश का था। इस कारण उसके गद्दी पर बैठने से दिल्ली के सिंहासन पर एक नवीन राजवंश का अधिकार स्थापित हुआ। उस समय तक सिंहासन पर वंशानुगत अधिकार की परम्परा स्थापित नहीं हुई थी और तलवार की शक्ति शासकों का निर्णय करती थी, इल्तुतमिश का दिल्ली के सिंहासन पर अधिकार करना अवैध नहीं माना जा सकता। इस कारण आरामशाह को समाप्त करके इल्तुतमिश का दिल्ली के सिंहासन पर अधिकार करना न तो अवैध था और न गलत। इल्तुतमिश ने किस प्रकार और क्या शिक्षा प्राप्त की, इसके बारे में पता नहीं लगता। परन्तु वह शिक्षित व्यक्ति, साहसी सैनिक और योग्य नेता था। ऐबक ने आरम्भ से ही उसे सर जांदार (अंगरक्षकों का प्रधान) का महत्वपूर्ण पद दिया। एक के पश्चात् एक पद से उन्नति करता हुआ वह बढ़ते-बढ़ते 'अमीरे-शिकार' के पद पर पहुँच गया।

Scanned with CamScanner

ऐबक की मृत्यु के पश्चात् सिपहसालार अली इस्माइल ने दिल्ली के तुर्की सरदारों की सम्मति लेकर इल्तुतमिश को दिल्ली आने के लिए निमन्त्रण दिया। इल्तुतमिश ने दिल्ली पहुँचकर अपने को सुल्तान घोषित कर दिया और 1211 ई० में आरामशाह को परास्त किया तथा उसका वध कर दिया।

कठिनाइयाँ :- इल्तुतमिश ने ऐबक से एक अरक्षित सिंहासन और छोटा राज्य प्राप्त किया। उसने आरामशाह को युद्ध में परास्त करके समाप्त कर दिया था परन्तु जब तुर्की सरदार दिल्ली में परास्त करके समाप्त कर दिया था परन्तु जब तुर्की सरदार (?) सुल्तान मानने से इन्कार में एकत्र हुए तब उनमें से कुछ ने उसे सुल्तान मानने से इन्कार की तैयारी कर दिया। वे दिल्ली से बाहर चले गये और विद्रोह की तैयारी करने लगे। इल्तुतमिश ने अपनी सेना लेकर उन पर आक्रमण किया और उनमें से अधिकांश को परास्त करके युद्ध में उन्हें परास्त करके उनमें से अधिकांश का वध कर दिया। नासिरुद्दीन कुबाचा ने कुतुबुद्दीन से झगड़ा नहीं किया था परन्तु वह इल्तुतमिश की कठिनाइयों से लाभ उठाकर उच्छ, सिन्ध और मुल्तान अपने राज्य का विस्तार कर रहा था। उच्छ, सिन्ध और मुल्तान के अतिरिक्त उसने भटिण्डा, कुहराम तथा सरस्वती को अपने अधिकार में कर लिया था। ऐसी कठिन परिस्थितियों में चंगेज खाँ के नेतृत्व में मंगोल आक्रमण का भय भी इल्तुतमिश के समक्ष में उपस्थित हुआ। इस प्रकार से सभी परिस्थितियाँ संकटपूर्ण थी। परन्तु इल्तुतमिश ने कौशल, साहस और शक्ति से इन सभी संकटों का मुकाबला किया तथा अन्त में सफलता प्राप्त की।

(1) यिल्दिज की पराजय :- यिल्दिज के प्रति इल्तुतमिश का व्यवहार सफल कूटनीतिज्ञता का रहा। जब वह सिंहासन पर बैठा तो यिल्दिज ने उसे अपने अधीन मानते हुए छत्र, दण्ड आदि राजचिन्ह भेजे। इल्तुतमिश ने उन्हें शान्ति से स्वीकार कर लिया। 1215 ई० में ख्वारिज्मशाह से पराजित होकर यिल्दिज लाहौर भाग आया और उसने थानेश्वर तक के पंजाब प्रदेश पर अधिकार कर लिया। इस अवसर पर इल्तुतमिश ने उससे अन्तिम निपटारा करने की तैयारी की और अपनी सेना

को लेकर आगे बढ़ा। 1215-1216 ई० में तराइन के युद्ध में यिल्दिज को पराजित करके कैद कर लिया गया। यिल्दिज को कैद करके बदायूं भेज दिया गया और उसी वर्ष उसका वध कर दिया गया। यिल्दिज के पश्चात् गजनी का कोई सुल्तान दिल्ली के सिंहासन का दावा नहीं कर सका।

② मंगोल आक्रमण का भय:- इल्तुतमिश के समय में भारत के तुर्की राज्य को मंगोलों के आक्रमण की सम्भावना से एक महान संकट उत्पन्न हुआ। मंगोलों के महान नेता चंगेज खाँ ने गोबी के रेगिस्तान और एशिया के पास के मैदान (Steppes) की समस्त बर्बर जातियों को अपने नेतृत्व में संगठित करके चीन, तुर्किस्तान, ईरान, मध्य एशिया, पर्शिया आदि को अपने पैरों तले रौंद दिया। उसने अलाउद्दीन मुहम्मद ख्वारिज्म शाह को सम्पूर्ण साम्राज्य नष्ट कर दिया। चंगेज खाँ ने खुरासान और अफगानिस्तान होते हुए सिन्धु नदी के तट तक उसका पीछा किया परन्तु वहीं आकर रुक गया। यद्यपि चंगेज खाँ का उद्देश्य भारत पर आक्रमण करना न था परन्तु यदि इल्तुतमिश ने जलालुद्दीन को सहायता दी होती तो सम्भवतया वह दिल्ली पर आक्रमण करता। ऐसी स्थिति में चंगेज खाँ जैसे महान विजेता के विरुद्ध इल्तुतमिश की विजय की सम्भावना नहीं थी। इस प्रकार इल्तुतमिश की उदासीनता ने तुर्की राज्य को मंगोल आक्रमण से बचा लिया। यही नहीं बल्कि उसने बाद में उससे उत्पन्न परिस्थितियों से लाभ उठाया।

③ कुबाचा की पराजय:- मुहम्मद गोरी का एक प्रमुख गुलाम नासिरुद्दीन कुबाचा भी था जिसे कच्छ की सूबेदारी दी गयी थी। उसने कुतुबुद्दीन ऐबक को तंग नहीं किया परन्तु इल्तुतमिश के गद्दी पर बैठते ही उसने सिन्ध-सागर, दोआब, सरस्वती, भटिण्डा और लाहौर तक अपना अधिकार कर लिया। इस कारण वह उत्तर पश्चिम सीमा और पंजाब में इल्तुतमिश का एक प्रमुख प्रतिद्वन्दी था जो कभी भी-

Scanned with CamScanner

खतरनाक सिद्ध हो सकता था। यिल्दिज ने लाहौर को कुबाचा से छीन लिया था परन्तु जब वह इल्तुतमिश से पराजित हो गया तब कुबाचा ने लाहौर को पुनः अपने अधीन कर लिया। तीन माह पश्चात् सन् 1228 ई० में उच्छ पर इल्तुतमिश का अधिकार हो गया। कुबाचा की स्थिति भक्कर में भी दुर्बल हो गयी और उसने सन्धि की वार्तालाप आरम्भ की। इल्तुतमिश ने उसे बिना किसी शर्त के आत्मसमर्पण करने की सलाह दी जिसे कुबाचा ने स्वीकार नहीं किया। अन्त में निराश होकर कुबाचा ने सिन्धु नदी में डूब कर अपनी जान दे दी। इस प्रकार 1228 ई० में इल्तुतमिश का एक अन्य प्रमुख शत्रु समाप्त हो गया। मुल्तान और उच्छ को दिल्ली राज्य में मिला लिया गया और अन्य बहुत से महत्वपूर्ण किलों को जीतकर इल्तुतमिश ने पंजाब और सिन्ध में अपनी स्थिति को दृढ़ कर लिया।

(4) बंगाल विजय :- कुतुबुद्दीन ऐबक के समर्थन और सहायता से अलीमर्दान खाँ ने बंगाल में अपनी सत्ता स्थापित की थी। इस कारण उसने कुतुबुद्दीन की अधीनता को स्वीकार किया था। जब इल्तुतमिश अपनी पश्चिमी सीमा की सुरक्षा में व्यस्त था तब गियासुद्दीन ने बिहार को अपने राज्य में सम्मिलित कर लिया और जाजनगर, तिरहुत, बंग तथा कामरूप के पड़ोसी-राज्यों से कर वसूल किया। इल्तुतमिश ने अपने पुत्र तथा अवध के सूबेदार नासिरुद्दीन महमूद को अनुकूल समय की प्रतीक्षा करने के आदेश दिये। इस बार इल्तुतमिश ने बंगाल और बिहार में पृथक-पृथक इक्तादारों (सूबेदारों) की नियुक्ति की। इसके पश्चात् ये इक्ता (सूबे) इल्तुतमिश की मृत्यु तक उसके अधीन रहे।

(5) हिन्दू राजाओं से संघर्ष (राजस्थान, मालवा, दोआब आदि) :- हिन्दू शासकों की शक्ति को दुर्बल करना और अपने राज्य के मुख्य भाग दोआब को अपने अधीन करना इल्तुतमिश के लिये आवश्यक था। उसने

हिन्दू राजाओं के प्रति दृढ़ और आक्रमणकारी नीति का पालन किया। मुख्यतया उसने तुर्की राज्य से छीने गये स्थानों को पुनः जीतने और अपने प्रदेशों में अपनी सत्ता को दृढ़ करने का प्रयत्न किया। उसने 1226 ई० में रणथम्भौर को जीत लिया। 1228-1229 ई० में जालौर के शासक उदयसिंह को आधिपत्य स्वीकार करने एवं वार्षिक कर देने के लिए बाध्य किया गया। उसके पश्चात् बयाना, सांभर, अजमेर, नागौर और उसके आस पास के प्रदेश जीते गये। 1234-1235 ई० में इल्तुतमिश ने मालवा पर आक्रमण किया तथा भिलसा और उज्जैन लूटने में सफलता पायी। इस प्रकार इल्तुतमिश ने तुर्की सत्ता से स्वतन्त्र हो गये प्रदेशों को पुनः जीतने में सफलता प्राप्त की, हिन्दू राजाओं की आक्रमणकारी शक्ति को उखाड़ दिया और विजित प्रदेशों में सफलतापूर्वक अपना आधिपत्य स्थापित किया।

(6) खलीफा द्वारा इल्तुतमिश के सुल्तान के पद की स्वीकृति :- इल्तुतमिश ने बगदाद के खलीफा से सुल्तान के पद की स्वीकृति की प्रार्थना की। फरवरी 1229 ई० में खलीफा के प्रतिनिधि इस स्वीकृति पत्र को लेकर दिल्ली पहुँचे। खलीफा द्वारा इल्तुतमिश को सुल्तान स्वीकार किये जाने के कारण उसका पद कानूनी बन गया और दिल्ली सल्तनत वैध रूप से एक स्वतन्त्र राज्य बन गया। जिसके लिए इस स्वीकृति से इल्तुतमिश को सुल्तान के पद को वंशानुगत बनाने और दिल्ली के सिंहासन पर अपने बच्चों के अधिकार को सुरक्षित करने में सहायता मिली।

(7) इल्तुतमिश की मृत्यु :- 1236 ई० में इल्तुतमिश ने बनियान के शासक और जलालुद्दीन मंगबर्नी के अधिकारी सैफुद्दीन हसन कार्लुग पर आक्रमण किया। परन्तु मार्ग में इल्तुतमिश बीमार हो गया जिसके कारण उसे दिल्ली

वापिस आना पड़ा। अप्रैल 1236 ई. में इल्तुतमिश की मृत्यु हो गयी।

इल्तुतमिश का मूल्यांकन :- इल्तुतमिश एक सुन्नी धार्मिक व्यक्ति, साहसी सैनिक, अनुभवी सेनापति और योग्य शासक था। वह उदार और कूटनीतिज्ञ भी था। गुलाम का गुलाम होते हुए भी जिस तीव्र गति से उसने उन्नति की और अन्त में सुल्तान के पद को प्राप्त किया, यह इसकी योग्यता का प्रमाण था। इल्तुतमिश सुन्नी था और उसने अपने दरबार में ईरानी राज दरबार के रीति-रिवाजों और व्यवहार को आरम्भ किया। वह विद्वानों और योग्य व्यक्तियों का सम्मान करता था। उसने समकालीन विद्वान मिनहाज-उस-सिराज और मलिक ताजुद्दीन को संरक्षण प्रदान किया था। विभिन्न योग्य व्यक्तियों के कारण उसका 'राज दरबार' सुल्तान महमूद गजनवी की भाँति ही गौरवपूर्ण बन गया था। इल्तुतमिश ने लाहौर के स्थान पर दिल्ली को अपनी राजधानी बनाया और उसे दिल्ली सल्तनत के सम्मान के अनुकूल सुन्दर और वैभवपूर्ण बनाया। उसने दिल्ली में विभिन्न तालाबों, मदरसे, मस्जिदें और इमारतें बनवायी। उसने कुतुबमीनार को पूरा कराया जो प्रारम्भिक इस्लामी कला का एक श्रेष्ठ नमूना माना जाता है।

Dr. Hem Narayan Mahto
Associate Professor
Deptt of History
R.N. College, Pandaul.

Scanned with CamScanner